

कदमों की बलहारी (११८)

आओ प्यारे रास विहारी मेरे सांवलिया गिरधारी ।

तेरे मोर मुकुट की झांकी मेरे नैननि में हैं धारी ॥

हे मन मोहन मुरली मनोहर नन्द नन्दन सुख कन्दा—२

गोपी नैन चकोर चन्द्रमा प्यारे बाल मुकुन्दा—२

तेरी अलकें हैं घुंघरारी मानो हैं नागिनि सी कारी

तेरे मोर॥१॥

यमुना तट बंसी बट तैनें कीन्हे रास विनासा—२

प्रेम मगनु हो गोपी आई मधुर मिलन की आसा—२

तेरे रूप में भई मतवारी भुली तन मन की सुधि सारी

तेरे मोर॥२॥

नूपुर धुनि सुनि कंकण धुनि सुनि मुरली तान सुहाई—२

फैल रही चहूं ओर विपन में प्रेम सुधा वर्षाई—२

नभ में मगनु भई देवनारी बोलें जय जय जय बनवारी

तेरे मोर॥३॥

तेरे चरणों का ध्यान करत हैं ऋषी मुनी सुर सारे—२
कोटि काम से अदभुत शोभा तेरी रूप उजारे—२
श्री मैगसि के सुखकारी तेरे कदमों पर बलहारी
तेरे मोर॥४॥